ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 14 कुल पृष्ठ-8 2 से 8 नवम्बर, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 का. शु.-14

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में

आर्यसमाज द्वारा उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत से शिष्टाचार भेंट एवं उनका अभिनन्दन

मुख्यमंत्री जी द्वारा 'रिस्पना पुल' का नाम 'महर्षि दयानन्द सेतु' करने की घोषणा, अन्य मांगों पर भी सहानुभूति एवं समर्थन जताया

आजादी के आन्दोलन में आर्य समाज के योगदान से सभी सुधीजन परिचित – स्वामी यतीश्वरानन्द

आज 30–10–2017 को उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा का एक 40 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में प्रदेश की राजधानी देहरादून स्थित सचिवालय में मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी से मिला और उनका स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। मुख्यमंत्री जी को आर्यसमाज की ओर से एक ज्ञापन तथा मांगपत्र भी प्रस्तुत किया गया। प्रतिनिधि मण्डल में आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड और उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी एवं डा. धीरज सिंह भी सम्मिलित थे। प्रतिनिधि मण्डल में प्रदेश के अनेक स्थानों से आर्यसमाज के अधिकारी एवं प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए। सभा की कार्यवाही का संचालन श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी ने किया। मुख्यमंत्री जी से मिलने पहुंचे प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों को मुख्यमंत्री जी सहित स्वामी आर्यवेश जी, विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द सरस्वती, श्री पुष्कर सिंह धामी, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, डा. धीरजसिंह एवं श्री प्रेमप्रकाश शर्मा सहित अन्य आर्य नेताओं ने सम्बोधित किया।

मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्रसिंह रावत जी का स्वागत एवं अभिनन्दन आर्यसमाज के सभी नेताओं एवं प्रतिनिधियों ने उन्हें ओ३म् का पटका व शाल ओढ़ाकर, ऋषि दयानन्द का चित्र भेंट कर व सत्यार्थप्रकाश सहित आर्यसमाज का साहित्य भेंट कर किया। ऐसा करते हुए स्वस्तिवाचन के मंत्रों का तीव्र स्वर से पाठ भी किया गया। इससे पूर्व श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी ने श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी से अपने पुराने संबंधों की चर्चा करने के साथ उनके सरल जीवन व गुणों का उल्लेख किया। उन्होंने आर्यसमाज की कुछ मांगों का भी संक्षेप में उल्लेख किया व मांग पत्र पढ़कर उसे बाद में उन्हें सौंप दिया। मुख्य मांग यह थी सन् 1879 में ऋषि दयानन्द हरिद्वार के कुम्भ मेले से देहरादून पहुंचे थे। देहरादून के वर्तमान विधान सभा चौक वा रिस्पना सेतु पर देहरादून के आर्यों ने सम्मानपूर्वक उनकी अगवानी की थी। आर्यसमाज ने मांग की कि इस स्थान का नाम महर्षि दयानन्द चौक कर दिया जाये। दूसरी मांग थी कि उत्तराखण्ड के नैनीताल जिले के भवाली आर्यसमाज की 90 वर्ष की लीज 31–3–2016 को समाप्त हो गई है। इसको फ्री होल्ड कराने में समस्यायें आ रही थी। इसके लिए आर्यसमाज ने

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

ईश्वर की वाणी

– पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

ईश्वरीय वाणी – ईश्वर की वाणी किसको कहते हैं? ईश्वरीय वाणी उस पवित्र पुस्तक का नाम है जिसमें परमात्मा की ओर से मनुष्य के लिए उपदेश हों, परमात्मा कहाँ है? प्रभु सर्वत्र है। वह कण–कण में ओत–प्रोत है। वह प्रत्येक वस्तु के भीतर है। वह प्रत्येक वाणी के भीतर है। वह प्रभु मुझमें है। आपमें हैं। कौन सा ऐसा मनुष्य है, कौन सा ऐसा पक्षी, कौन सा ऐसा पशु है जिसके भीतर भगवान न हो। परमात्मा सर्वव्यापक है। वह सर्वद्रष्टा है। प्रत्येक वस्तु से उसकी सत्ता का प्रकाश होता है।

वह कण–कण में छुपा है और कण–कण में व्याप्त हो रहा है,

उस ज्योतिस्वरूप पर, जो अव्यक्त है, प्रकाश का पर्दा है।

बात दूर वाले से

यदि ऐसी बात है तो परमात्मा की वाणी का क्या अर्थ हुआ? हम उससे बात करते हैं जो हमसे दूर होता है। जो समीप होता है उससे धीरे–धीरे बात करते हैं। जो दूर होता है उससे चिल्लाकर बात करते हैं और जो अति दूर होता है उससे दूरभाष से बात करते हैं। तार देते हैं, पत्र लिखते हैं। परमात्मा हमारे हृदयों में विराजमान है तो उसको बात करने की क्या आवश्यकता है? क्या परमेश्वर हमसे बहुत दूर रहता है?

ऐसा नहीं है। परमात्मा का कोई कुटुम्ब, वंश अथवा मित्र बंधुओं का टोला नहीं, जिससे वह किसी विशेष स्थान से किसी विशेष साधन से हमसे बातचीत करता है, यह परमात्मा का निरादर है, कुफ्र है – नास्तिकता है। प्रभु इन सब बंधनों से मुक्त है। जैसे प्रकाश की किरणें किसी गन्दी वस्तु पर पड़कर भी गन्दी नहीं होती, इसी प्रकार ईश्वर भी प्रत्येक वस्तु में व्यापक होते हुए भी समीप वस्तुओं की कैद (बंधन) से सर्वथा मुक्त है बंधनरहित है।

मनुष्य–मनुष्य से दूर होता है।

परन्तु वाणी की आवश्यकता मानव को है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से दूर होता है। वह चाहता है कि अपने विचार दूसरों पर प्रकट करे। माता बालक को गोदी में लिये रहती है तथापि माँ के हृदय व बच्चे के हृदय में दूरी होती है। माता कुछ ऐसे शब्द अपनी वाणी से निकालती है जिससे बालक यह समझ ले कि माँ क्या चाहती है। बालक को जब भूख लगती है तो वह वाणी से चिल्लाता है ताकि उसकी माता सुन सके। इसी प्रकार आप दूसरे उदाहरण ले सकते हैं। इसलिए परमात्मा की ओर से प्रत्येक व्यक्ति को दो विशेष वस्तुएँ दी गई हैं – बोलने को वाणी और सुनने के लिए कान। मैं जिस शब्द को वाणी से बोलता है उसको आप कान से सुनते हैं। बात एक है। बोलने वाले के लिए यह वाणी से निकली हुई वस्तु है और सुनने वाले के लिए यह कान से प्राप्त हुई वस्तु है।

शब्द अर्थ का सम्बन्ध

अतः यद्यपि परमात्मा के लिए वाणी की आवश्यकता नहीं, परन्तु मनुष्य के लिए ईश्वरीय वाणी का अर्थ है वे उपदेश जो परमात्मा ने वाणी के द्वारा बोलने व कान के द्वारा सुनने के लिए दिए हैं। वाणी के तीन भाग हैं। उपदेश के ज्ञान के तीन भाग हैं। वाणी से निकले हुए शब्द, वे पदार्थ, जिनके लिए वे शब्द प्रयुक्त किए गए और उन पदार्थों व शब्दों का ज्ञान की दृष्टि से सम्बन्ध। एक उदाहरण से समझिये। जल एक शब्द है। फारसी में इसको 'आब' कहते हैं। अरबी में 'मार' कहते हैं। संस्कृत में इसको 'जल' कहते हैं। ये सब शब्द हैं, परन्तु इन शब्दों का एक अर्थ है 'पा' अर्थात् वह वस्तु जिसको हम पीते हैं। उस वस्तु में जिसको पिया जाता है और उस शब्द में जिसको बोला जाता है एक इल्मी (ज्ञान का) सम्बन्ध है आपने कहा, "पानी लाओ"। आपकी वाणी से शब्द पानी निकला। वह पानी नहीं है। पानी का नाम है यदि मुझमें ज्ञान है तो मैं समझकर आपको पानी ला दूँगा, परन्तु यदि आपकी भाषा नहीं जानता तो आपकी आज्ञा का पालन न कर सकूँगा। यदि आपके शरीर में वाणीऔर शरीर में कान नहीं होते तो न आप अपने विचार प्रकट कर सकते और न मैं सुन सकता। अतः परमात्मा ने मेरी आवश्यकताओं और आपकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर मनुष्य को बोलने की शक्ति दी और उसके लिए दो यन्त्र भी दिये अर्थात् वाणी व कान। पशुओं को भी वाणी व कान दिये और उनका भी बोलने की शक्ति दी, परन्तु उनकी योग्यता की दृष्टि से उनकी बोलने की शक्ति अपूर्ण है। कारण? उनका सम्पूर्ण शरीर ही मानव देह की तुलना में अपूर्ण व दोषयुक्त है। कुत्ता केवल भौंक सकता है और आपके मुख से निकाले गए शब्दों का कुछ–कुछ अर्थ समझ सकता है, परन्तु मनुष्य के समान पूरा–पूरा नहीं।

परमात्मा अपना ज्ञान कैसे देता है

परमात्मा मनुष्य को अपना कलाम (ईश्वरीय वाणी) कैसे देता है? वह सर्वत्र है और उसे सदा बोलने की आवश्यकता नहीं। हाँ, अल्पबुद्धि, अल्पज्ञ व अल्पशक्ति मनुष्य के परस्पर के काम चलाने के लिए भाषा की आवश्यकता है। जैसे प्रभु ने हमें आँखें दी और आँख में देखने की शक्ति दी और आँख की सहायता के लिए सूर्य बनाया, उसी प्रकार परमात्मा ने वाणी दी और कान दिए और वाणी व कान के प्रयोग के लिए मन व मस्तिष्क बनाया और उनकी सहायता के लिए ज्ञान दिया। यह ज्ञान बाहर से नहीं दिया गया न कहीं दूर से भेजा गया न उसके लिए किसी पत्रवाहक/संदेशवाहक की आवश्यकता पड़ी। परमात्मा ने सृष्टि के आदि में ऋषियों के हृदयों में ज्ञान का प्रकाश किया। परमात्मा उनके हृदयों में था। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 71वें सूक्त में बताया है कि परमात्मा ऋषियों के दिलों में ज्ञान का प्रकाश करता है अर्थात् उनके हृदयों को एक ऐसी शक्ति प्रदान करता है कि वे शब्दों और उनके अर्थों को ठीक–ठाक समझ सकें तथा अपने से थोड़ी बुद्धि रखने वाले लोगों को अपनी वाणी व कानों के द्वारा ज्ञान दे सकें। वे सबसे पहले होते हैं। उनका गुरु परमात्मा होता है। वह मानवीय गुरुओं के समान वाणी व कान की सहायता नहीं लेता। 'दिल रा ब दिल राह अस्त' – हृदय हृदय की बात जान लेता है और फिर गुरु–शिष्य परम्परा चल पड़ती है।

ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश कब?

ईश्वरीय ज्ञान कब नाज़िल (उतरता) होता है? नाज़िल शब्द हमारे भाव को समझाने के लिए उपयुक्त नहीं है। यदि परमात्मा ऊपर होता है और हम नीचे होते तो वह ऊपर से किसी साधन से हम तक अपना कलाम (ज्ञान) सुनाता। नाज़िल के बजाय संस्कृत का प्रकाश शब्द अधिक उपयुक्त है। इसके लिए अरबी का शब्द इनकशाफ़, बजाय नाज़िल के अधिक अच्छा है। परमात्मा पहले आँख बनाकर बाहर से देखने की शक्ति नहीं डालता प्रत्युत भीतर से ज्योतिरहित तत्त्व को ज्योतित कर देता है। परमात्मा के कार्य बाह्य नहीं होते। इखराज (निकास) और इदखाल (प्रवेश) दोनों शब्द मात्र आरज़ी (अस्थाई) हैं। प्रभु अपने इस ज्ञान का प्रकाश सृष्टि के आदि में करता है। यदि प्रत्येक मनुष्य के हृदय में परमेश्वर ही ज्ञान का प्रकाश करता तो गुरु–शिष्य अथवा सीखने–सीखाने की परम्परा सदा ही न चलती है। यह संसार के व्यवहार में सर्वथा विपरीत होता। न अध्यापक होते न स्कूल होते। न मक्तब (पाठशालाएँ) होते, न पाठ (वाज़), उपदेश होते और न (वाइज़) उपदेशक। ऐसे संसार की तो कल्पना करना भी कठिन है, परमात्मा के नियम बदलते नहीं (कुरान में यही आता है)।

जब मार्गदर्शन के लिए कुछ नहीं था

हम आर्य समाजी लोग वेद को ईश्वरीय वाणी कहते हैं अर्थात् वेद वह वाणी है जिसका परमात्मा ने ऋषियों के हृदयों में उस समय प्रकाश किया जब मनुष्य उत्पन्न ही हुआ था और उसके मार्गदर्शन के लिए कुछ भी नहीं था। ऋषियों को उपदेश–आदेश हुआ कि वेदों का उपदेश दूसरों को निरन्तर करते रहें। वेदों का प्रचार तभी से आज तक निरन्तर चला आता है।

क्या वेद को कोई जानता है?

आज तो वेदों को कोई जानता नहीं, फिर आर्य समाज का दावा ठीक नहीं प्रतीत होता। इसका आपके पास क्या उत्तर है?

मनुष्य ईश्वरीय देन को विकृत करता है। तनिक सोचिए! वेदों का अध्ययन कीजिए तथा संसार की अन्य–अन्य पुस्तकों को पढ़िए। आपको ज्ञात होगा कि दीन अथवा धर्म की जो वास्तविक बातें हैं वे सब वेदों में दी हुई हैं और अन्य–अन्य पुस्तकों व भाषाओं में उनका विकृत रूप है। परमात्मा की बनाई जो वस्तु मनुष्य के प्रयोग में आती है उसमें कुछ न कुछ मिलावट अथवा बिगाड़ हो जाता है। हम शुद्ध जल पीते हैं परन्तु हमारे शरीर में से वही स्वच्छ जल दुर्गन्धयुक्त होकर निकलता है। प्रभु ने ऑक्सीजन हाइड्रोजन से शुद्ध जल बनाया। मनुष्य ने प्रयोग किया तो उसके पेट अथवा स्नानागार में जाकर वह मैला हो गया। इस मैले जल में स्वच्छ जल के अंश ऑक्सीजन और हाइड्रोजन ठीक उसी अनुपात में विद्यमान हैं परन्तु, बाह्य वस्तुओं ने बाहर से प्रविष्ट होकर जल को प्रदूषित कर दिया है। इसी प्रकारा वेदों की भाषा और वेदों के विचार करोड़ों वर्षों से मानवीय समूहों जातियों की अपनी दुर्बलताओं के कारण जो क्रमशः बिगड़ते चले आते हैं उसके कारण संसार के मजहबों व विचारों में भी भेद हो गया।

ऋषि दयानन्द ने वेदों के स्वाध्याय, उपदेश व प्रचार के लिए आर्य समाज को स्थापित किया और लोगों से कहा कि तुम मेरी बात मत मानो, वेद की बात मानो। मैं कोई नवीन पुस्तक अथवा नवीन ज्ञान नहीं लाया। जिस प्राचीन ज्ञान को वाणी को लोग भूल गए हैं और भूल–भूलैयों में पड़ गए हैं, उनको फिर से प्रसारित करना चाहिए। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। उनका पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है।

मूलभूत और सार्वभौमिक नित्य सत्य वही हैं

उसूली (सैद्धान्तिक) व असली (वास्तविक) सच्चाइयों में कोई अन्तर नहीं आया। जैसे पुरानी पुस्तकों से ऊँचे सिद्धान्त लेकर नए लेखक स्वयं अपने को प्रसिद्ध कर देते हैं ताकि उनकी धाक जनमानस पर जम जाये, इसी प्रकार बहुत से विद्वानों व उपदेशकों ने उन्हीं प्राचीन ग्रन्थों से उन सच्चाइयों को लेकर नवीन पुस्तकें रच दीं और स्वयं को उनका रचयिता प्रसिद्ध कर दिया। गंगा नदी में वास्तविक जल तो गंगोत्री से ही आता है, परन्तु नीचे उतरते दूषित हो जाता है। एक उदाहरण देता हूँ। यजुर्वेद में आता है कि जो परमात्मा को हर दिल में और हर दिल को परमात्मा में विद्यमान समझता है, वह कभी कष्ट नहीं पाता। वेद की यह शिक्षा परमात्मा की सत्ता को प्रत्येक पदार्थ में व्यापक बताती है। यह एक सैद्धान्तिक सत्य है। लोगों ने मूल से यह समझ लिया कि परमात्मा कहीं आकाशस्थ है, अतः जब उसको परमात्मा से कुछ मांगना होता है तो आकाश की ओर हाथ करके खुदा को पुकारता है। खुदा के न्यारे–न्यारे घर कल्पित कर लिए गए हैं। यह सब मानवीय अज्ञान का फल है। वेदों के स्वाध्याय से ये बातें स्पष्ट हो जाती हैं।

आर्य समाज की स्थापना वेद–प्रचार के लिए की

ऋषि दयानन्द ने वेदों के स्वाध्याय, उपदेश व प्रचार के लिए आर्य समाज को स्थापित किया और लोगों से कहा कि तुम मेरी बात मत मानो, वेद की बात मानो। मैं कोई नवीन पुस्तक अथवा नवीन ज्ञान नहीं लाया। जिस प्राचीन ज्ञान को वाणी को लोग भूल गए हैं और भूल–भूलैयों में पड़ गए हैं, उनको फिर से प्रसारित करना चाहिए। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। उनका पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है।

– गंगा ज्ञान सागर से साभार

हरियाणा राजकीय अध्यापक संघ के नेता एवं आर्य समाज के समर्पित व्यक्तित्व स्वर्गीय चौ. बलवन्त सिंह आर्य के सुयोग्य सुपुत्र

श्री नरेन्द्र हुड्डा जी को पुत्र शोक

आर्य समाज हनुमान रोड के पूर्व मंत्री, वर्तमान में आन्तरिक लेखा निरीक्षक एवं आर्य पब्लिक स्कूल राजा बाजार के प्रधान श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा जी के सुपुत्र श्री कार्तिकेय हुड्डा जी का 18 अक्टूबर, 2017 को 29 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। श्री कार्तिकेय जी आर्य समाज हनुमान रोड के सदस्य एवं पूर्व आर्यवीर दल अधिष्ठाता थे। उनका अन्तिम संस्कार द्वारका सै.–18 श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 29 अक्टूबर को 11 से 1 बजे तक आर्य समाज हनुमान रोड में हुई। सुयोग्य सुपुत्र कार्तिकेय के असामयिक निधन से हुड्डा परिवार के ऊपर दुःख का पहाड़ टूट गया है। दिवंगत होनहार युवक कार्तिकेय की शादी की तैयारियाँ चल रही थी किन्तु दीपावली की पूर्व संन्ध्या पर वह सदा के लिए विदा हो गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री नरेन्द्र हुड्डा एवं समस्त परिजनों को उनके निवास पर पहुँचकर सान्त्वना दी तथा उनको ढांढस बंधाया। उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति एवं परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने हेतु परमात्मा से प्रार्थना की।

आर्य समाज एवं वैदिक इण्टर कॉलेज सिसौली, मुजफ्फरनगर में आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया महासम्मेलन का उद्घाटन

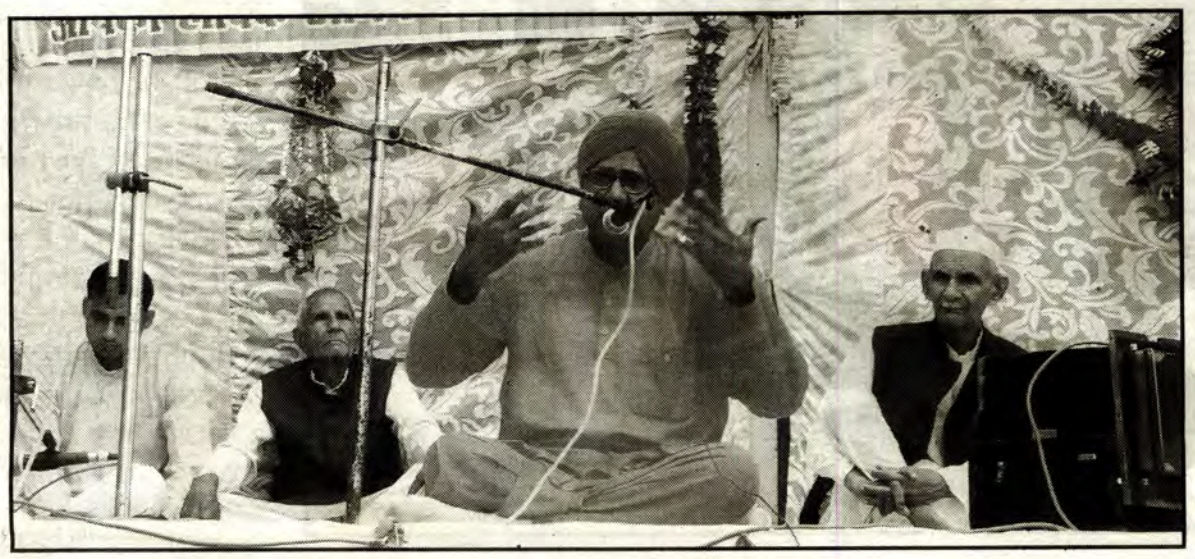

आर्य समाज एवं वैदिक इण्टर कॉलेज सिसौली, जिला–मुजफ्फरनगर, उ. प्र. में 28 से 30 अक्टूबर, 2017 तक आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। महासम्मेलन का विधिवत उद्घाटन 28 अक्टूबर को दोपहर 2 बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन के साथ किया।

महासम्मेलन में आचार्य गुरुदत्त जी मुजफ्फरनगर, डॉ. धीरज कुमार शास्त्री रमाला, श्री धर्मपाल शास्त्री, श्री आर्यमुनि जी, स्वामी सत्यवेश जी आदि विद्वानों के अतिरिक्त प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका श्रीमती संगीता आर्या, हवा सिंह तूफान व श्री सोमपाल जी ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र में सर्वश्री महिपाल सिंह प्रबन्धक, डॉ. वीरेन्द्र राठी मंत्री, सुधीर कुमार शास्त्री प्रधान, मा. राजेन्द्र सिंह प्रधाचार्या, अनिल कुमार कोषाध्यक्ष, बलवीर सिंह उपप्रधान, तेजवीर सिंह उपमंत्री, बॉवी प्रधान ग्राम बाजू, परिषद् के व्यायामाचार्य ब्र. सहसरपाल आर्य एवं श्रीपाल आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा आदि ने स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत किया। यज्ञ का कार्यभार श्री अंकित आर्य ने कुशलता के साथ संभाला। श्री ऋषिपाल आर्य ने बड़ी कुशलता के साथ कार्यक्रम का संयोजन किया।

इस अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण में स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती महाभारत के पश्चात् एक मात्र महापुरुष एवं ऋषि थे जिन्होंने वेदों को पुनः प्रतिष्ठापित किया और दुनिया के लोगों को वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। महर्षि दयानन्द जी पहले महापुरुष थे जिन्होंने 1857 की क्रांति फेल हो जाने के पश्चात् स्वतंत्रता आन्दोलन का बीड़ा उठाया और अनेक क्रांतिवीरों को बलिदान के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया तथा स्वतंत्रता आन्दोलन के यज्ञ की अग्नि को अपनी प्रेरणा से प्रज्जवलित रखा। महर्षि दयानन्द जी ने समाज सुधार के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाये। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज को एक बार फिर अपना पुराना तेजस्वी एवं आन्दोलनात्मक स्वरूप जनता के समक्ष प्रस्तुत करना होगा। उसे सामान्य जनता के दुःख–दर्द को समझकर उसकी दवा बनना होगा। वर्तमान में चहुं ओर जनता त्रस्त है। त्राहि–त्राहि मची हुई है। महिलाओं पर अत्याचार बढ़ रहे हैं, युवाओं के चरित्र पर अश्लीलता एवं अपसंस्कृति आक्रमण कर रहे हैं, किसान कर्जे के बोझ से आत्महत्या करने को मजबूर है तथा करोड़ों पढ़े–लिखे नौजवान बेरोजगारी की चक्की में पिस रहे हैं। भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है, शराब की नदियाँ बह रही हैं और युवा वर्ग नशे की भयंकर चपेट में है। धर्म के नाम पर अनेक कथित गुरु एवं मठाधीश अपने काले कारनामों से धार्मिक जगत को कलंकित कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में आर्य समाज को आगे आना चाहिए। आर्य समाज के एक–एक कार्यकर्ता को आगे आकर जनता की समस्याओं के समाधान के लिए उनके साथ खड़ा होना चाहिए और विभिन्न ज्वलन्त मुद्दों पर जन–जागरण के द्वारा आम जनता को संगठित करना चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि सिसौली गांव इलाके का ऐतिहासिक गांव है। यहाँ से किसानों के बड़े–बड़े आन्दोलन चलाये गये हैं और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किये गये हैं। अतः अब समय आ गया है कि सिसौली के आर्य महासम्मेलन के माध्यम से पुनः वही आन्दोलन एवं संघर्ष की योजना तैयार की जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री राजेन्द्र सिंह एवं उनकी टीम को सफल आयोजन के लिए साधुवाद दिया।

इस अवसर पर प्रसिद्ध विद्वान एवं समाजसेवी आचार्य गुरुदत्त जी ने छात्र एवं छात्राओं को अपने जीवन के अनुभवों से अवगत कराया और प्रेरित किया कि वे अपने बुजुर्गों व गुरुओं के प्रति अभिवादन करना सीखें। देश पर मर–मिटना सीखें। सात्विकता एवं पवित्रता को अपनायें। ईमानदारी, समाजसेवा, परोपकार, देशभक्ति, ईश्वरभक्ति एवं गुरुभक्ति के द्वारा अपने जीवन को उन्नति के शिखर पर पहुँचायें। आचार्य गुरुदत्त जी ने आर्यों को सुझाव दिया कि वे नई पीढ़ी के बच्चों को संस्कारित करने के लिए सचेत हो जायें। यदि समय रहते उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया तो नई पीढ़ी के बच्चे घोर चारित्रिक पतन के शिकार हो जायेंगे और उसके बाद पश्चाताप के सिवाय और कुछ हाथ नहीं लगेगा।

ओजस्वी भजनोपदेशिका श्रीमती संगीता आर्या के गीतों से श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो गये। उनकी ओजस्वी वाणी से महिलाएँ विशेष रूप से प्रभावित होती हैं। इस त्रिदिवसीय महासम्मेलन में विद्वानों के व्याख्यान एवं भजनो के कार्यक्रम निरन्तर चलते रहे। महासम्मेलन पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् कैथल के तत्वावधान में कार्यकर्ता बैठक का आयोजन

पाखण्ड एवं अन्धविश्वास से समाज को बचाया जाये

– स्वामी आर्यवेश

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद कैथल द्वारा आज आर्य समाज मंदिर करनाल रोड, कैथल में जिला स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य रूप से पहुंचे। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम का संचालन मास्टर श्यामलाल आर्य ने किया जबकि संयोजन जिला प्रधान डॉ होशियार सिंह आर्य व वरिष्ठ अधिकारी सत्यवीर आर्य ने किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने मुख्य उद्धबोधन में कहा कि आज समाज में पाखण्ड व अंधविश्वास तेजी से फैलता जा रहा है जिस से सावधान व सतर्क रहने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि श्रद्धा रखो लेकिन अंधश्रद्धा मत रखो, विश्वास करो लेकिन अंधविश्वास मत करो। अपने विवेक व बुद्धि के साथ तर्क पर खरी उतरने वाली बातों को जीवन मे उतारो। स्वामी जी ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुवे सावधान किया तथा आहावान किया कि आज के समाज मे पाखंडी बाबाओं की बाढ़ सी आई हुई है। आज लोग यदि अपने विवेक से फैसला लें व इन डेरों में जाना बंद कर दें तो ये डेरे अपने आप बंद हो जाएंगे। आजकल के ये बाबा महिलाओं को अपनी तरक्की की सीढ़ी बना कर प्रयोग कर रहे हैं।

इस अवसर पर ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने कहा कि समाज में युवाओं को संस्कारित करने की आवश्यकता है क्योंकि संस्कारवान युवा ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

जयपाल आर्य ने कहा कि कैथल जिले में युवा निर्माण अभियान तेज किया जाएगा। युवा भजनोपदेशक जसविंद्र ने ईश्वर भक्ति के गीत सुनाए।

आर्य समाज द्वारा प्रांतीय पाखंड खंडन सम्मेलन सम्मेलनों का आयोजन 5 नवंबर को सी ए वी हाई स्कूल हिसार में तथा 10 दिसम्बर को दयानंद पार्क, जींद में किया जा रहा है। इनमे जिले के कार्यकर्ता बढ़ चढ़ कर भाग लेंगे।

जयपाल आर्य, सत्यवीर आर्य, डॉ होशियार सिंह, श्याम लाल आर्य व अमित कुमार, सुरेंद्र आर्य की जिम्मेदारी लगाई गई।

जिले में सभी ब्लॉक की आर्य समाज की इकाई बनाने की जिम्मेदारी भी इसी टीम को दी गई। साथ ही युवा निर्माण शिविरों की रूप रेखा भी तैयार की गई।

इस अवसर पर श्री कृष्ण शास्त्री, मनोज ढुल, रजत आर्य, नरेश आर्य, जसविंद्र आर्य, बलदेव मान, रवि प्रकाश, नरेंद्र आर्य, शलिन्दर आर्य, मनीराम आर्य, हरिकेश आर्य, अशोक आर्य के अतिरिक्त आर्य युवक परिषद कैथल के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सत्यवीर आर्य ने सभी का आभार प्रकट किया।

पृष्ठ–1 का शेष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आर्यसमाज द्वारा उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत से शिष्टाचार भेंट एवं उनका अभिनन्दन

मुख्यमंत्री जी को शुल्क में छूट देने व उसे न्यूनतम शुल्क पर आर्यसमाज को स्थाई रूप से देने की मांग की थी। मुख्यमंत्री जी से तीसरी मांग प्रदेश में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने की थी जिससे युवा व अन्य लोगों का जीवन स्वस्थ व सुखी बनाया जा सके और परिवारों पर होने वाले दुष्प्रभावों को रोका जा सके।

मुख्यमंत्री जी ने अपने सम्बोधन में आर्यसमाज के प्रतिनिधि मण्डल का उनका अभिनन्दन किये जाने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने आर्यसमाज की प्रथम मांग का उल्लेख कर कहा कि जहां ऋषि दयानन्द आये थे वह चौक विधानसभा चौक के नाम से प्रसिद्ध है। यदि वह इसका नाम बदल भी देंगे तब भी, पुराने अनुभव के अनुसार, लोग इसे पुराने नाम से ही पुकारेंगे। उन्होंने स्वयं सुझाव दिया कि इस चौक से जुड़ा हुआ ही रिस्पना नदी का जो विशाल सेतु है उसका नाम वह 'महर्षि दयानन्द सेतु' कर देंगे और शीघ्र ही इससे सम्बन्धित आदेश जारी हो जायेंगे। भवाली आर्यसमाज की समस्याओं के प्रति भी उन्होंने पूर्ण सहानुभूति प्रदर्शित की और पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। आर्यसमाज के अतीत के कार्यों की भूरि भूरि प्रशंसा की और कहा कि देश को स्वतन्त्रता दिलाने में आर्यसमाज की प्रमुख भूमिका व योगदान है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने कहा था कि वेद भारत के लिए हैं और भारत वेद के लिए है। उन्होंने कहा कि 'भारत भारतीयों के लिए' शब्दों का उद्घोष भी सबसे पहले उन्होंने ही किया था। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आर्यसमाज की स्थापना के बहुत बाद कांग्रेस की स्थापना हुई थी परन्तु आरम्भ के वर्षों में उन्होंने देश की आजादी की बात नहीं की थी। वह तो आरम्भ में अंग्रेजों के सहयोगी रहे। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज से संबंधित पुस्तकें उन्होंने पढ़ी हैं और उन्हें इन तथ्यों का ज्ञान है। उनके शब्द यह भी थे कि 'महर्षि दयानन्द ने सबसे पहले आजादी का बिगुल बजाया था।' मुख्य मंत्री जी ने कहा कि भवाली आर्यसमाज की लीज बढ़ाने में कोई दिक्कत नहीं है। उसे कर दिया जायेगा। नशाबन्दी की आर्यसमाज की मांग की चर्चा कर उन्होंने कहा कि विवाहों के अवसरों पर शराब का सेवन किया जाता है इसलिये वह किसी विवाह में नहीं जाते और मुख्यमंत्री बनने के बाद नहीं गये हैं। उन्होंने आर्यसमाज से कहा कि वह शराब के विरोध मे प्रचार करें और लोगों में जागृति उत्पन्न करें जिससे लोग शराब न पीयें। मुख्यमंत्री जी ने आर्यसमाज के कार्यों की प्रशंसा की और प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों से मिलने पर भी अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अभिनन्दन एवं स्वागत भाषण में कहा कि मुख्यमंत्री जी का सहृदयतापूर्वक आर्यसमाज का आमंत्रण स्वीकार करने के लिए धन्यवाद है। उन्होंने कहा कि विगत दिनों उत्तराखण्ड के रूद्रपुर में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड की बैठक में भवाली आर्यसमाज की लीज की समस्या पर विचार किया गया था। वहां यह निर्णय किया गया था कि मुख्यमंत्री जी से भेंट कर इसका निदान करने के लिए निवेदन करेंगे। विधान सभा चौक का नाम महर्षि दयानन्द चौक करने के संबंध में स्वामी जी ने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जी का सन् 1857 की प्रथम क्रान्ति व स्वतन्त्रता संग्राम में भी सक्रिय योगदान था और वह इस क्रान्ति के प्रायः सभी सूत्रधारों से मिले थे व उन्हें इसकी प्रेरणा की थी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार

द्वारा विधान सभा चौक का नाम उनके नाम पर करने से यह उनके प्रति श्रद्धांजलि होगी। स्वामी जी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का भी स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने कुछ दिन पूर्व युवा पीढ़ी को नशे से बचाने की बात कही है। उन्होंने कहा कि शराब बन्दी किये बिना देश उन्नति नहीं कर सकता। स्वामीजी ने कहा कि पहाड़ के लोग भी नशे से होने वाली हानियों के शिकार हैं। परिवार में एक व्यक्ति द्वारा नशा करने से पूरा परिवार पीड़ित होता है व दुःखी रहता है। उन्होंने पुरानी सरकार के समय में यूएनओ की एक रिपोर्ट की भी चर्चा की और कहा कि शराब की खुली बिक्री के चलते देश का विकास नहीं हो सकता। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने मुख्यमंत्री जी को यशस्वी होने का आशीर्वाद दिया और कहा कि उनके शासनकाल में देवभूमि उन्नति को प्राप्त हो और सारा देश इस देवभूमि को नमन करे। स्वामी जी के वक्तव्य के अन्त के शब्द थे कि सार्वदेशिक सभा की ओर से माननीय मुख्य मंत्री जी का अभिनन्दन एवं धन्यवाद।

ऋषि भक्त और विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द ने अपने सम्बोधन में मुख्यमंत्री जी को आर्यसमाज का विस्तृत परिचय दिया। उन्होंने कहा कि देश के सभी सुधीजन आर्य समाज के धर्म, देश और समाज के हितकारी कार्यों से परिचित हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की आर्यसमाज की सभी मांगों को मुख्यमंत्री जी स्वीकार कर लेंगे। नशे की चर्चा कर उन्होंने प्रतिनिधि मण्डल के सभी सदस्यों को बताया कि मुख्यमंत्री जी नशे के जबरदस्त खिलाफ हैं। विधायक श्री पुष्कर जी धामी ने कहा कि देश व समाज के हितकारी कार्यों में आर्यसमाज की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रधानमंत्री द्वारा चलाये जा रहे स्वच्छता अभियान को आर्यसमाज का ही कार्यक्रम बताया। उन्होंने भी आशा व्यक्त की कि मंख्यमंत्री आर्यसमाज की सभी मांगों को स्वीकार कर लेंगे। मुख्यमंत्री जी से शिष्टाचार भेंट में डा. वेदप्रकाश गुप्ता, श्री प्रेम प्रकाश शर्मा एवं डा. धीरजसिंह जी आदि ने भी संक्षिप्त विचार व्यक्त किये।

लगभग एक घंटा चली बैठक में प्रदेश के अनेक स्थानों से 40 से अधिक प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। मुख्यमंत्री जी की ओर से सबको जलपान कराया गया। बैठक में अन्य उपस्थित महत्वपूर्ण लोगों में डा. धनंजय आर्य गुरुकुल पौंधा, आचार्य चन्द्रभूषण जी, श्री सुमन्तसिंह आर्य, श्री हाकिमसिंह जी, पुरोहित रणजीत सिंह जी, श्री वीरेन्द्र पंवार, श्री ज्ञानचन्द गुप्ता व उनके सहयोगी, सभा मंत्री श्री दिनेश कुमार, श्री मानपाल सिंह, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री उम्मेद सिंह विशारद, श्री ओम प्रकाश मलिक कोषाध्यक्ष प्रान्तीय सभा, डा. वेदप्रकाश गुप्ता जी और अनेक महिला सदस्य आदि उपस्थित रहे। हमें भी इस कार्यक्रम का साक्षी होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ओ३म्।

– मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001
फोनः09412985121

मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली के तत्वावधान में सम्मान समारोह व छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन

शिक्षा ही जीवन मे सफलता का साधन है

– स्वामी आर्यवेश

साक्षर ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा नही – आचार्या सुकामा

अमेरिका में भी वैदिक शिक्षा देने के कार्य को आगे बढ़ाया जाएगा – सतीश प्रकाश

29 अक्टूबर 2017(लाढ़ोत) रोहतक जिले के लाढोत भैयापुर स्थित गुरुकुल में आज मानव सेवा प्रतिष्ठान व नार्थ अमेरिकन जाट चौरिटी के संयुक्त तत्वावधान में सम्मान समारोह व पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उद्घाटन भाषण द्वारा अपने विचार रखते हुये आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि जीवन मे सफलता की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी शिक्षा है। यदि आज मनुष्य शिक्षित है तो ही समाज मे आगे बढ़ सकता है। आज हमें शिक्षा के साथ संस्कृति को भी जानना चाहिए। यदि देश को आगे लेकर जाना है तो हमें प्राचीन संस्कृति से जुड़ने की आवश्यकता है।मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा आज छात्र व छात्राओं को दिया गया सहयोग सबसे बड़ी सेवा में गिना जाएगा। आप किसी का सहयोग देना चाहते है तो उसे शिक्षा में सहयोग कर दो। इस से उसका जीवन तो बनेगा ही साथ ही वे राष्ट्र निर्माण में भी अहम भूमिका निभाएंगे।

आचार्या सुकामा ने कहा कि केवल अक्षर को समझन लेना ही शिक्षा नही है। बल्कि सर्वांगीण विकास जिस माध्यम से होता हो वो ही शिक्षा है। डॉ. यज्ञवीर शास्त्री ने कहा कि परोपकार को जीवन मे अवश्य धारण करें। जरूरत मंद लोगों की सहायता ही परोपकार कहलाता है।

अमेरिका में दयानंद गुरुकुल के संस्थापक डॉ. सतीश प्रकाश ने कहा कि अमेरिका में भी वैदिक ज्ञान को सिखाने के लिए गुरुकुल खोला गया है। वहां पर और ज्यादा प्रयास किये जायेंगे कि प्राचीन संस्कृति को वहाँ भी प्रतिस्थापित किया जा सके। वैदिक संस्कृति केवल भारत के लिए ही नहीं बल्कि दुनिया के सभी लोगों को ऊंचाई की ओर ले जाने वाली है।

गुरुकुल लाढोत के संस्थापक आचार्य हरिदत्त ने कहा कि युवाओं को संभालने की आवश्यकता है।

बहन प्रवेश आर्या व पूनम आर्या ने अपने इस सम्मान को उन अजन्मी बेटियों को समर्पित किया जिनको ये दुनिया नही देखने दी गई। उन्होंने कहा जब तक एक भी बेटी मां के पेट मे मारी जाएगी तब तक हमारा संघर्ष जारी रहेगा।

नार्थ अमेरिकन जाट चौरिटी के प्रधान रामस्वरूप आर्य ने कहा कि प्रतिभाएं आर्थिक तंगी के कारण दब ना जाएं इसलिए ही हमारी संस्था प्रतिभावान छात्र व छात्राओं को सहयोग करती है।यदि भारतीय युवाओं को अवसर व सहयोग मिले तो भारत के विकास में तेजी आएगी।

हॉलैंड के अमरीष तिवारी ने कहा कि हमारा निर्माण यदि वैदिक विचारधारा के आधार पर होगा तो ही हम सही मायने में मनुष्य बन पाएंगे। इनके अतिरिक्त अमेरिका के ओम दलाल, मास्टर रामकुमार गहलोत,आजाद सिंह लाकड़ा,डॉ. सुरेंद्र कुमार ने अपने विचार रखे।

इस कार्यक्रम का संचालन रामपाल शास्त्री ने किया। चन्द्रदेव शास्त्री,सोमदेव शास्त्री, हरवीर आर्य, विवेकानन्द शास्त्री,डॉ कवंर सिंह, कमलेश, राजबीर शास्त्री,शीला, बलजीत सांगवान, अजय आर्य, दिक्षेन्द्र आर्य, संजय आदि का विशेष सहयोग रहा।

बहन पूनम आर्या व बहन प्रवेश आर्या सहित देश मे समाजिक कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाने वाले 11 महानुभावो का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या संयोजक बहन प्रवेश आर्या के अतिरिक्त उड़ीसा के कुंजदेव मनीषी, हैदराबाद, डॉ आचार्य ओमप्रकाश राजस्थान, पंडित ब्रजपाल कर्मठ, मुज्जफरनगर,उतर प्रदेश,सहदेव समर्पित, संपादक शांतिधर्मी, डॉ यज्ञवीर,देहरादून उत्तराखण्ड, कल्पना आर्या चोंटीपुरा,आचार्य भद्रकाम वर्णी,दिल्ली,ब्रह्मचारी यशवीर, रोहतक आदि मुख्य रहे। इनके अतिरिक्त 50 से ज्यादा संस्थाओं के लगभग 200 छात्र व छात्राओं को दोनों संस्थाओं की ओर से लगभग 25 लाख रुपये का आर्थिक सहयोग पारितोषिक के रूप में भेंट किया गया।

आर्य समाज रमाला, जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश के वार्षिकोत्सव में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का प्रेरणादायक उद्बोधन

गत् 28 व 29 अक्टूबर, 2017 को आर्य समाज रमाला, जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश का वार्षिक समारोह बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। समारोह में आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पादित किया गया और विभिन्न सम्मेलनों में उनके वेद प्रवचनों की धूम मची रहती है। उनके अतिरिक्त श्री तेजवीर सिंह आर्य, श्री हरिसिंह हरी व बहन ललिता आर्या के भजनों का कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा। उत्सव में 28 अक्टूबर, 2017 को प्रातः 10 से 1 बजे तक होने वाली सभा को सम्बोधित करने के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में पधारे। पूरे कार्यक्रम का संरक्षण गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व चौ. धर्मपाल सिंह चेयरमैन एवं संयोजन युवा विद्वान् डॉ. धीरज कुमार शास्त्री ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला। उद्बोधन से पूर्व चेयरमैन धर्मपाल सिंह, श्री अजय पाल सिंह एलम, महात्मा रणवीर जी, डॉ. धीरज कुमार शास्त्री, श्री विजय सिंह राठी आदि ने शॉल एवं माल्यार्पण द्वारा स्वामी आर्यवेश जी का अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी से पूर्व वैदिक विद्वान् आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी ने अपने संक्षिप्त व्याख्यान में ईश्वर के सर्वव्यापी स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वैदिक सिद्धान्तों के समक्ष दार्शनिक क्षेत्र में दुनिया की कोई विचारधारा टिक नहीं सकती। उन्होंने विष्णु शब्द का अर्थ करते हुए बताया कि वह परमात्मा कण–कण में सर्वत्र विद्यमान है। इसलिए वह विष्णु है और जहाँ–जहाँ भी सृष्टि की रचना दिखाई देती है वहाँ उस रचना के रचयिता का होना आवश्यक है। अतः परमात्मा एक देशीय अथवा किसी आकार वाला नहीं हो सकता। ईश्वर की सुन्दर व्याख्या एवं वेदों के महत्त्व पर दिये गये प्रवचन से श्रोंताओं की सभी शंकाओं का आचार्य श्री ने बहुत सुन्दर निराकरण किया। उनके बाद स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में 'वेद ही क्यों?' विषय पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि सृष्टि के आरम्भ में जब मनुष्य की उत्पत्ति हुई तो स्वाभाविक ज्ञान न होने के कारण उन्हें नैमित्यिक ज्ञान की आवश्यकता थी और वह नैमित्यिक ज्ञान परमपिता परमात्मा ने चार ऋषियों के हृदय में वेद के रूप में प्रदान किया था। उस समय वर्तमान में प्रचलित कोई भी मत अथवा सम्प्रदाय अथवा कथित धर्म विद्यमान नहीं था। न ही कोई धर्म पुस्तक या धर्म गुरु विद्यमान था और वैदिक मान्यताओं का पूरे संसार में महाभारत पर्यन्त प्रभाव एवं वर्चस्व चलता आया था। वर्तमान मत–सम्प्रदायों का इतिहास बताता है कि 3700 वर्ष पूर्व पारसी मत सबसे पहले प्रचलित हुआ और उसके पश्चात् यहूदी, जैन, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, सिख, बहाई आदि मतों का आविर्भाव हुआ। इसी प्रकार भारत में अनेक छोटे–छोटे सम्प्रदाय एवं जमात खड़ी हो गई जिन्हें चलाने वाले सैकड़ों गुरु सामने आये। इन सब परिस्थितियों के बीच लगभग 142 वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना आर्यों का मुख्य कर्त्तव्य घोषित किया। महर्षि दयानन्द जी ने जब वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया तो धर्म के क्षेत्र में अपना आधिपत्य जमाये बैठे कथित गुरुओं, विद्वानों एवं धर्माचार्यों ने प्रश्न उठाया कि वेद अब पृथ्वी पर हैं ही नहीं, वेदों को तो शंकासुर नाम का राक्षस पाताल लोक लेकर भाग गया है। इस प्रकार की भ्रांतियाँ इन ढोंगी, पाखण्डी एवं कथित धर्मगुरुओं ने पूरे समाज में प्रचारित कर रखी थी।

महर्षि दयानन्द जी ने वेद संहिता की मूल प्रति उपस्थित करके सारे धार्मिक जगत में हड़कम्प मचा दिया और कहा कि वेद के विरुद्ध प्रचलित मूर्ति पूजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष एवं राशिफल, भूत–प्रेत, तंत्र–मंत्र, गंडे ताबीज़, झाड़–फूंक एवं विविध भ्रामक मान्यताओं को अब वेद की कसौटी पर कसा जायेगा और वेद विरुद्ध मान्यताओं को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए वे शास्त्रार्थ एवं बहस करने के लिए उद्यत रहेंगे। महर्षि ने अपनी अद्भुत तर्कशक्ति, प्रबल इच्छाशक्ति, उच्चकोटि के पाण्डित्य एवं अदम्य साहस के बल पर सम्पूर्ण धार्मिक जगत में हलचल मचा दी और जहां भी उनके साथ अन्य मतावलम्बियों ने शास्त्रार्थ किये वहीं पर स्वामी जी की विजय हुई। यदि ऋषि हत्यारे जगन्नाथ ने विष और दूध में कांच मिलाकर महर्षि की हत्या नहीं की होती तो महर्षि का मिशन उन्हीं के जीवन में अवश्य ही सफल हो चुका होता। हजारों लोग महर्षि के विचार सुनकर उनके अनुयायी बनते जा रहे थे। अनेक राजा, समाज के अग्रणी लोग, प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रतिष्ठा प्राप्त गणमान्य लोग स्वामी जी के शिष्य बन चुके थे। किन्तु अल्पायु में ही महर्षि का जीवन एक बहुत बड़े षड्यन्त्र के तहत छीन लिया गया जिससे पूरी मानवता की महान क्षति हुई। स्वामी आर्यवेश जी ने धर्म के नाम पर चल रहे विविध पाखण्डों के विरुद्ध लोगों को जागरूक होकर आवाज उठाने की अपील की। उन्होंने कहा कि कथित धर्मगुरु, बाबा एवं मठाधीश वर्तमान समय में धर्म परायण, भोली–भाली जनता को अपने भ्रम जाल में फांसकर लूट रहे हैं और अकूत धन–सम्पत्ति इक्ट्ठी करके विलासिता एवं ऐश्वर्य का जीवन जी रहे हैं। धर्म के नाम पर ये सभी पाखण्डी एवं ढोंगी अधर्म एवं पाप को बढ़ावा दे रहे हैं। उनके व्यक्तिगत आचरण, चरित्र एवं विलासितायुक्त जीवनशैली की ढोल की पोल खुलती जा रही है। अब जनता भी उनके कारनामों से परिचित हो चुकी है। अतः आर्यों को चाहिए कि अब सामान्य जनता को वेद एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों से अवगत करायें। स्वामी जी ने पूरे देश में आर्य समाज की तरफ से पाखण्ड, नशाखोरी, अश्लीलता एवं महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने का आह्वान किया। स्वामी जी के ओजस्वी उद्बोधन से उपस्थित आर्यजनों में विशेष जोश उपस्थित हो गया। उन्होंने सामूहिक रूप से स्वामी आर्यवेश जी के आह्वान का पूर्ण समर्थन करने का आश्वासन दिया।

ग्राम–सिवाना, जिला–झज्जर में विशाल कुश्ती दंगल का आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विशिष्ट अतिथि के रूप में आशीर्वाद देने पहुँचे

गत् 21 अक्टूबर, 2017 को ग्राम–सिवाना, जिला–झज्जर में गाँव के युवा सरपंच श्री हरिओम एडवोकेट के संयोजन में विशाल कुश्ती दंगल का आयोजन किया गया। इस दंगल में पहली कुश्ती 51 हजार रुपये के इनाम की रखी गई थी तथा इसी प्रकार अन्य कुश्तियों में भी विशेष इनाम की व्यवस्था थी। कुल 2 लाख रुपये के इनाम जीत हासिल करने वाले पहलवानों को प्रेषित किया गया। इस इनाम राशि की व्यवस्था सरपंच श्री हरिओम के पूज्य पिता एवं ग्राम के पूर्व सरपंच चौधरी भागमल ने अपने परिवार की ओर से की थी। इस अवसर पर पहलवानों को इनाम बांटने एवं आशीर्वाद प्रदान करने के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं रोहतक लोकसभा क्षेत्र के युवा सांसद श्री दीपेन्द्र हुड्डा तथा स्थानीय विधायक डॉ. रघुवीर सिंह कादियान विशेष रूप से उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री दीपेन्द्र हुड्डा ने प्रथम कुश्ती जीतने वाले पहलवान को 51 हजार रुपये की राशि प्रदान की। उन्होंने उपस्थित जनसमूह को प्राचीन खेल यथा कुश्ती, कबड्डी आदि को बढ़ावा देने के लिए युवाओं से अपील की कि वे अधिक से अधिक रुचि लेकर इन खेलों में भाग लिया करें।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने समस्त पहलवानों का साधुवाद करते हुए कहा कि खिलाड़ियों को सदैव सात्विक भोजन, सात्विक विचार एवं नियमित दिनचर्या का पालन करना चाहिए। जो नौजवान ऐसा करते हैं वे समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। स्वामी जी ने युवा सरपंच श्री हरिओम एडवोकेट एवं उनके पूरे परिवार की इस विशाल आयोजन को करने के लिए और पूरे व्यय को वहन करने के लिए विशेष प्रशंसा की और भविष्य में भी परोपकार की भावना को अपने जीवन में बनाये रखने की भी प्रेरणा दी।

इस अवसर पर आयोजकों ने स्वामी आर्यवेश जी एवं दीपेन्द्र हुड्डा जी का माल्यार्पण से स्वागत भी किया।

वरिष्ठ राजकीय उच्च विद्यालय, राजौंद, जिला–कैथल में 'मेरी पाठशाला व मेरी संस्कारशाला' कार्यक्रम का किया गया आयोजन

माता पिता भी बच्चों को संस्कार देने में अहम भूमिका निभाएं – स्वामी आर्यवेश

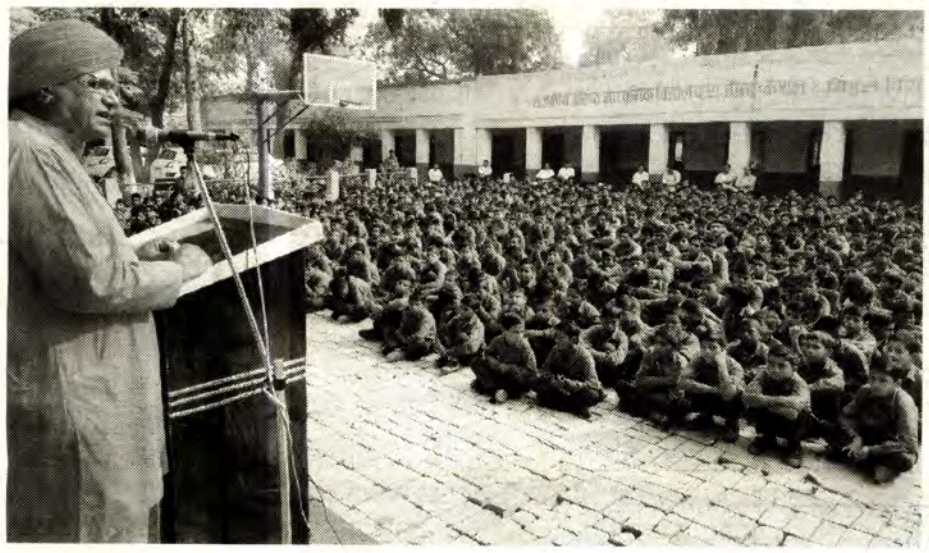

मनुष्य जीवन में शिक्षा और शिक्षा में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। ये शब्द सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय राजौंद व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद कैथल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित मेरी पाठशाला–मेरी संस्कारशाला कार्यक्रम में कहे। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि जब तक हम अच्छे मनुष्य नही बनते तब तक हम ना तो अच्छे डॉक्टर बन सकते हैं, ना ही अच्छे नेता बन सकते हैं, ना ही अच्छे पिता, अच्छे पुत्र व ना ही समाज के अच्छे नागरिक बन सकते हैं। मनुष्य बनने का एक ही रास्ता है वो है संस्कारों का रास्ता।। प्राचीन वैदिक मान्यताओं में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। संस्कारित मनुष्य ही एक ऐसे समाज की स्थापना कर सकता है जिसमे ना भ्रष्टाचार होगा ना मजहब व ना जातिवाद का अस्तित्व होगा।

उन्होंने कहा कि फसल को उगाने के लिए मनुष्य मिट्टी, पानी आदि के टैस्ट आदि करवाता है । परंतु अपनी संतान पैदा करने के लिए उनके पास कोई योजना नहीं होती। उनमें किस प्रकार के संस्कार डालने हैं उसकी किसी को परवाह नहीं होती है। बाद में जब संतान बड़ी होकर माता–पिता और समाज के लिए नासूर बन जाती है तो विलाप करते हैं कि संतान नालायक निकली। अपने संबोधन में स्वामी जी ने कहा कि बच्चा अपनी माँ के गर्भ में संस्कार जन्म से पहले ही ग्रहण करने लग जाता है। इसलिए समाज को उन्नति की तरफ ले जाने के लिए संस्कार युक्त शिक्षा का प्रबंध करना आज के समय में अति आवश्यक है।

कार्यक्रम में बोलते हुये प्राचार्य चन्द्रशेखर ने कहा कि यह आज का युग धर्म है कि बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार दिए जाएं। यदि हम संस्कार देने में कामयाब हो गए तो निश्चित मानिये भारत पुनः विश्व गुरु बन जाएगा। लेकिन शुरुआत आज से ही करनी पड़ेगी। इस अवसर पर प्रिंसिपल विक्रम कुमार व देवेंद्र सहारण, सुरेश कुमार आदि ने स्वामी जी का स्वागत किया।

सुरेश कुमार ने बताया कि यह कार्यक्रम मेरी पाठशाला मेरी संस्कारशाला के तहत आयोजित किया गया है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने कहा कि आर्य युवक परिषद बहुत पहले से ही युवाओं के निर्माण का कार्य कर रहा है अब यह कार्य स्कूल के छात्रों को संस्कार देने के साथ आगे बढ़ाया जाएगा। विशेषकर स्कूलों के बच्चों में शिक्षा के साथ संस्कार देने की इस पहल का निश्चित रूप से सकारात्मक परिणाम निकलेगा।परिषद के प्रांतीय उप प्रधान जयपाल आर्य ने इस अवसर पर स्कूल स्टाफ का धन्यवाद किया।

आज के कार्यक्रम का संयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद कैथल के प्रधान डॉ होशियार सिंह ने किया। विद्यालय के स्टाफ व ग्रामीणों ने सर्वप्रथम स्वामी आर्यवेश जी का माल्यार्पण से स्वागत किया। प्राचार्य, मुख्य अधयापक ने स्वामी आर्यवेश जी को स्मृति चिन्ह भेंट किया।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सर्वश्री जयपाल आर्य, बाजिन्दर सिंह, दिनेश, नीना, राकेश, मोहन लाल, अनिल कुमार, गुरुमुख, भगवान दास, बिंदु, दिलबाग, आलोक,अनिता, संजीव, शालिन्द्र आर्य, किरणपाल आदि उपस्थित रहे।

।।ओ३म्।।

स्वामी दयानन्द | सुभाषचन्द्र बोस | राम प्रसाद | भगत सिंह | अशफाक उल्ला खाँ | राजगुरु | सुखदेव | लाजपत राय

देश की आजादी के आन्दोलन में
अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अमर शहीदों की याद में

'एक शाम' शहीदों के नाम

दिनांक : 10 नवम्बर, 2017 (शुक्रवार) समय : 2 से 5 बजे तक
स्थान : पट्टी चौधरान, छपरौली, बागपत, उत्तर प्रदेश

अध्यक्षता
स्वामी आर्यवेश जी
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

भजनोपदेशक
चौ. सहदेव बेधड़क जी
प्रधान भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद

मुख्य अतिथि
सरदार किरणजीत सिंह जी
(शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे)

विशेष : इस अवसर पर श्री किरणजीत सिंह जी छपरौली नगर के शहीदों के परिजनों को सम्मानित करेंगे।

स्वागतकर्ता : श्री संजीव खोखर, चेयरमैन छपरौली

आयोजक
आर्य समाज छपरौली व समस्त नगरवासी

मीडिया सहयोगी – मिशन आर्यावर्त्त न्यूज बुलेटिन – 9354840454, 8218863689

दीपावली पर्व के अवसर पर ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक में प्रतिष्ठित समाजसेवी श्री रामचन्द्र ठेकेदार के निवास पर किया गया यज्ञ का आयोजन

ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक, हरियाणा में प्रतिष्ठित आर्यश्रेष्ठी एवं समाजसेवी श्री रामचन्द्र ठेकेदार के घर पर दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के यजमान श्री रामचन्द्र जी के सुपुत्र श्री प्रदीप कुमार ने बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञ में आहुतियाँ अर्पित की। श्री प्रदीप कुमार आई.ए.एस. की परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं और अपने संकल्प को और अधिक मजबूत करने के निमित्त उन्होंने यह यज्ञ सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में कराया। यज्ञ में श्री रामचन्द्र ठेकेदार एवं डॉ. नारायण सिंह आर्य ने भी विशेष रूप से भाग लिया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने मनुष्य जीवन की उन्नति के लिए संकल्पाग्नि के महत्त्व पर विशेष प्रकाश डालते हुए कहा कि लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प एवं अपेक्षित परिश्रम करना अत्यन्त आवश्यक है। जो व्यक्ति अपने लक्ष्य के लिए संकल्पाग्नि को तीव्र रखते हुए पूर्ण परिश्रम करता है उसे लक्ष्य प्राप्ति अवश्य हो जाती है। स्वामी जी ने नवयुवक प्रदीप कुमार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उन्हें आशीर्वाद एवं उपयुक्त मार्गदर्शन भी प्रदान किया। यज्ञ में राष्ट्रीय योग–प्रतियोगी परविन्दर कुमार एवं श्री रामचन्द्र जी के बड़े सुपुत्र संदीप भी सम्मिलित हुए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के उपप्रधान श्री रामकुमार आर्य को मातृशोक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के उपप्रधान श्री रामकुमार आर्य की माता श्रीमती मन्नो देवी का देहावसान 26 अक्टूबर, 2017 को हो गया। वे 93 वर्ष की थीं। माता मन्नो देवी जी एक धर्मपारायणा जुझारू महिला थीं। उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों को उच्च संस्कार देकर समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कराने में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। वे अपने परिवार में नित्यप्रति हवन आदि करके अपने घर को निरन्तर पवित्र करती रहती थीं।

उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन रविवार 5 नवम्बर, 2017 को अग्रसेन धर्मशाला, पश्चिमी ज्योतिनगर, दिल्ली–94 पर निम्न कार्यक्रमानुसार किया गया है।

शांति यज्ञ प्रातः – 8 से 10 बजे तक (निवास स्थान पर)
भहन प्रवचन व श्रद्धांजलि – 10.30 से 1 बजे तक
सहभोज – दोपहर 1 बजे से

– रामकुमार सिंह आर्य (पुत्र)

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का जिला कैथल हरियाणा में तूफानी दौरा

27 अक्टूबर, 2017 को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने हरियाणा के जिला–कैथल का तूफानी दौरा किया। उनके साथ सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य भी दौरे में रहे। प्रातः 9 बजे राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय वरिष्ठ कन्या महाविद्यालय राजौन्द के संयुक्त कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी, ब्र. दीक्षेन्द्र जी, जिला आर्य युवक परिषद् कैथल के प्रधान डॉ. होशियार सिंह आर्य एवं प्रान्तीय आर्य युवक परिषद् के उपप्रधान श्री जयपाल आर्य एवं व्यायाम शिक्षक श्री शैलेन्द्र कुमार आर्य के साथ विद्यालय प्रांगण में पहुँचे। जहाँ उनका प्रिं. चन्द्रशेखर एवं प्रिं. विक्रम सिंह चहल के नेतृत्व में दोनों स्कूलों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं ने माल्यार्पण द्वारा भव्य स्वागत किया। उसके पश्चात् स्वामी आर्यवेश जी का लगभग एक घण्टे तक धारा प्रवाह छात्रोपयोगी व्याख्यान हुआ जिसे सभी ने शांत चित्त होकर ध्यान पूर्वक सुना।

के.वी.एम. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पाई, जिला–कैथल में आगमन

राजौंद से अपने साथियों के साथ के.वी.एम. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पाई, जिला–कैथल में स्वामी आर्यवेश जी पहुंचे जहाँ विद्यालय के प्रधानाचार्य सन्त आकृति एवं प्रकृति के धनी श्री मुकेश आर्य ने स्वामी जी एवं उनके साथियों का जोरदार स्वागत किया।

मध्यान्ह के पश्चात् विद्यालय की बड़ी कक्षाओं के छात्र एवं छात्राओं के बीच स्वामी जी का सारगर्भित व्याख्यान हुआ। स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में छात्रों को नैतिकता के महत्त्वपूर्ण मूल्यों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि केवल शिक्षा प्राप्त कर लेना ही काफी नहीं है बल्कि संस्कारों को जीवन में धारण करना भी अत्यन्त आवश्यक है। संस्कार विहीन शिक्षित मनुष्य अनेक भ्रष्टाचार एवं अनाचार की घटनाओं में संलिप्त पाये जाते हैं और वे शिक्षित समाज को अपने कुकृत्यों से कलंकित करते हैं। स्वामी जी ने लक्ष्य के प्रति गम्भीर एवं दृढ़ निश्चयी होने पर बल दिया। उन्होंने विद्यार्थियों की दिनचर्या पर भी प्रकाश डाला और कहा कि प्रातः जल्दी उठना और रात को ठीक समय पर सोना अत्यन्त आवश्यक है। जीवन में स्वच्छता एवं पवित्रता के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने कहा कि हमें व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए और अपने मन में पवित्र विचारों को विशेष स्थान देना चाहिए। अश्लीलता, कुटिलता, चंचलता, अनुशासनहीनता, स्वच्छन्दता आदि दोषों को विद्यार्थियों को सदैव दूर रखना चाहिए और संयम, सदाचार, सद्व्यवहार, शिष्टाचार, कर्त्तव्यपालन, अनुशासन, एकाग्रता, सात्विकता आदि गुणों को जीवन में विशेष स्थान देना चाहिए।

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्वामी जी के विचारों से समस्त विद्यार्थी अत्यन्त प्रभावित हुये। प्रिं. मुकेश आर्य जी ने स्वामी जी से आग्रह किया कि वे जब भी इस क्षेत्र में आयें तो हमारे विद्यालय में पधारकर हमें अनुगृहीत अवश्य करें।

हरियाणा पर्यटन केन्द्र होटल कोयल, कैथल में स्वागत एवं पत्रकार सम्मेलन

पाई से रवाना होकर स्वामी आर्यवेश जी एवं उनके सभी साथी कैथल जिला मुख्यालय पर हरियाणा सरकार के पर्यटन केन्द्र होटल कोयल पहुँचे। जहाँ युवा नेता श्री दर्शन सिंह मालखेड़ी के नेतृत्व एवं संयोजन में सैकड़ों युवाओं ने स्वामी जी का माल्यार्पण द्वारा भव्य स्वागत किया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रारम्भ से ही स्तम्भ रहे श्री दर्शन सिंह मालखेड़ी प्रभावशाली युवा नेता हैं, वे कैथल की जाट संस्थाओं के प्रधान पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। उनके निर्देश पर उनके सुपुत्र प्रिय श्री राहुल मालखेड़ी ने अपने सैकड़ों युवा साथियों को स्वामी आर्यवेश जी के स्वागत किये लिए आमंत्रित किया हुआ था साथ ही श्री दर्शन सिंह जी ने यहीं पर पत्रकार वार्ता का भी शानदार आयोजन किया हुआ था। सैकड़ों लोगों के जलपान की भी व्यवस्था की गई थी।

इस अवसर पर पत्रकार वार्ता को स्वामी आर्यवेश जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड एवं अन्धविश्वास, नशाखोरी, युवाओं के चारित्रिक पतन एवं कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान प्रारम्भ हो चुका है जिसे आर्य समाज के विभिन्न संगठन मिलकर हरियाणा के हर जिले में पहुँचायेंगे। स्वामी जी ने कहा कि आज कैथल के आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं की महत्त्वपूर्ण बैठक आर्य समाज करनाल रोड में बुलाई गई है जिसका संयोजन श्री सत्यवीर आर्य, मा. श्यामलाल आर्य तथा डॉ. होशियार सिंह आर्य ने मिलकर किया है। स्वामी जी ने प्रश्नों का उत्तर देते हुए पत्रकारों को बताया कि 5 नवम्बर को आर्य समाज हिसार तथा 10 दिसम्बर को अर्बन स्टेट जीन्द में विशाल पाखण्ड विरोधी सम्मेलनों का आयोजन हो रहा है जिसमें हरियाणा के कोने–कोने से लोग शामिल होंगे। पत्रकार वार्ता में स्वामी जी के साथ श्री दर्शन सिंह मालखेड़ी के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र भी मंच पर विराजमान थे।

बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या की पूज्या माता श्रीमती सावित्री देवी की पुण्य तिथि पर विशेष यज्ञ का किया गया आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

आर्य समाज द्वारा संचालित बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या की पूज्या माता स्वर्गीया श्रीमती सावित्री देवी की 9वीं पुण्यतिथि के अवसर पर सैक्टर–3, रोहतक स्थित उनके निवास पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। आदरणीया बहन जी के पूज्य पिता मा. नफेसिंह के यजमानत्व में आयोजित उक्त यज्ञ में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, संयोजक प्रवेश आर्या एवं परिवार के सभी सदस्य सम्मिलित हुए। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ में पहुँचकर स्वर्गीया सावित्री जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि बहन सावित्री देवी जी एक धर्मपारायणा, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं दृढ़ इच्छाशक्ति आदि गुणों से सम्पन्न अध्यापिका थीं। उन्होंने अपने सभी पुत्र–पुत्रियों को नैतिकता एवं पवित्रता के संस्कारों से ओत–प्रोत किया था। वे सदैव प्रसन्नचित्त रहती थीं।

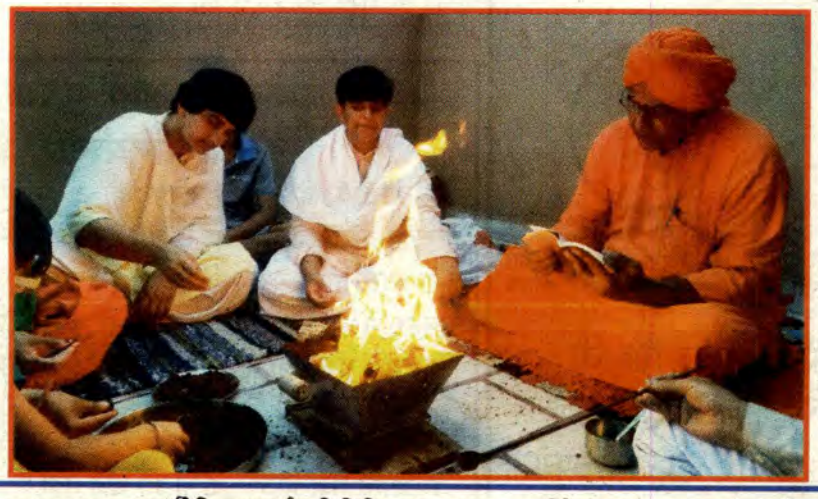

असाध्य रोग से पीड़ित होते हुए भी उन्होंने कभी अपने चेहरे पर विषाद नहीं आने दिया। उन्होंने अपनी पुत्री बहन प्रवेश आर्या को देश और समाज के उपकार के लिए जीवन लगाने की प्रेरणा देकर एक महान कार्य किया। उनके जीवन में कभी निराशा का विचार नहीं आता था। उनके परिवार में उनके पति मा. नफेसिंह जी के अतिरिक्त उनके बड़े पुत्र श्री प्रदीप कुमार एवं पुत्रवधु श्रीमती प्रभा, छोटे पुत्र डॉ. परविन्दर कुमार एवं पुत्रवधु श्रीमती सुमन तथा उनकी बड़ी बेटी शशि आर्या एवं दामाद मा. जगदीश जी आदि उनकी प्रेरणा से निरन्तर सर्वप्रकार से उन्नति कर रहे हैं। यज्ञ में परिवार के अन्य शुभचिन्तक पुरुष एवं महिलाओं ने भी सम्मिलित होकर आहुतियाँ प्रदान की एवं स्वर्गीया सावित्री देवी जी को स्मरण किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।